5

शाऊल

एक आनन्ददायक प्रारम्भ का न खत्म होने वाला अंत

1 शमूएल में बहुत से ध्यान खींचने वाले लोगों में एक जवान किसान है जो बिन्यामीन के गोत्र से था। पहले उसका परिचय अपने पिता की खोई हुई गधियों को ढूंढ़ने के लिए भेजे गए के रूप में होता है (9:3-5)। शुरू में वह विनम्र तथा दूसरों का ध्यान रखने वाला व्यज़्ति था। पर बाद के वर्षों में उसमें एक नाटकीय परिवर्तन आ गया। सफलता का हर अवसर मिलने के बावजूद वह बुरी तरह से असफल हो गया! नीचे दी गई घटना से उसके जीवन का सही उदाहरण मिलता है।

नास्तिकों की एक सोसायटी के लोग धर्म का मज़ाक उड़ाने तथा परमेश्वर की निन्दा करने हेतु एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए हर रविवार को सुबह इकट्ठे होने लगे। उन्होंने अपनी बाइबलें भी जला दी थी! हाल ही में उन्होंने अपनी खतरनाक संगति में एक जवान को मिला लिया था। उसका पालन-पोषण धार्मिक माहौल में हुआ था। इस दुष्ट मण्डली में शामिल होने के बाद उसने भी अपनी बाइबल जला दी और कभी चर्च न जाने की प्रतिज्ञा कर ली। कुछ देर बाद वह बहुत बीमार पड़ गया। एक मसीही आदमी उसका हाल पूछने गया, तो वह बहुत निराश लगा। मसीही ने उसे मन फिराने के लिए समझाने की कोशिश की। उसने उसे परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में बताया। परन्तु जवान कहने लगा, ''आप मेरे साथ अनुग्रह की बातें ज़्यों कर रहे हो? अब फ़ायदा नहीं होगा! पहले मैं प्रार्थना कर सकता था, परन्तु अब मैं प्रार्थना नहीं करूंगा। मैं प्रार्थना नहीं करूंगा!'' कुछ दिनों बाद वह उन लोगों को, जिन्होंने उसे परमेश्वर की निन्दा करने के लिए उकसाया था, बहुत बुरा-भला कहते हुए मर गया। उसके अंतिम शज़्द थे: ''मेरी बाइबल! हाय मेरी बाइबल!''

उस जवान की तरह राजा शाऊल की समस्या भी विश्वास से फिरने की ही थी। विश्वास से फिरने को बाइबल में एक वास्तविक खतरे के रूप में दिखाया गया है (होशै 4:16; यशायाह 1:4; प्रकाशितवाज़्य 2:4; 1 तीमुथियुस 6:10, 21; 2 तीमुथियुस 4:4)। चार पुस्तकें उद्धार से गिरने के बारे में बहुत कुछ बताती प्रतीत होती हैं:

यिर्मयाह बार-बार ''भटक जाना'' शज़्द का इस्तेमाल करता है जो कि बाइबल की सब पुस्तकों से अधिक है।

होशै को कई लोग "भटक जाने वाले का सुसमाचार" कहते हैं।
गलतियों की पत्री एक ऐसी कलीसिया के नाम लिखी गई जो अपनी चंचलता के लिए प्रसिद्ध थी (गलतियों 1:6; 5:7)।
इब्रानियों की पुस्तक पवित्र लोगों के एक ऐसे समूह के लिए लिखी गई जो मसीह में विश्वास को त्यागने की परीक्षा से जूझ रहा था।

पुराने नियम में शाऊल भटकने का सबसे स्पष्ट उदाहरण है। वह जिस बात में सामर्थी होना चाहिए था, उसी में सबसे कमज़ोर साबित हुआ (15:17)। उसे उसकी विनम्रता के कारण चुना गया था, फिर भी राजा की पदवी उसकी विनम्रता को घमण्ड में बदलकर उसके दु:खद अंत का कारण बनी। ऐसे विनाश पर ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि परमेश्वर का एक जन भक्ति की चोटी से विनाश की खाई में गिर गया है!

शाऊल का इतिहास: आनन्ददायक शुरुआत

ऐतिहासिक विवरण में कीश के पुत्र शाऊल के उदय का वर्णन मिलता है। 9:2 में उसे अपने पिता की आज्ञाओं का पालन करने वाले एक आज्ञाकारी पुत्र के रूप में दिखाया गया है। खोई हुई गधियों को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते अंतत: वह सहायता के लिए शमूएल के पास गया। शाऊल के साथ शमूएल की बातचीत से यह स्पष्ट हो गया कि शाऊल ही वह राजा होना था जिसकी इच्छा इस्राएलियों ने की थी। परन्तु शाऊल ने यह मानने से इन्कार कर दिया (9:21)। अगले दिन, जब शाऊल घर को लौटने की तैयारी कर रहा था, तो "उसके मन को परिवर्तित किया" गया (10:9); वह एक अच्छा आदमी बन चुका था। शमूएल ने उसे बताया था कि राजा के रूप में परमेश्वर की पसन्द की पुष्टि के लिए उसे मार्ग में तीन चिह्न मिलेंगे। गधियां मिल जाएंगी (10:2); शाऊल को आराधना करने के लिए जाने वाले तीन लोगों की ओर से उपहार मिलेंगे (10:4); और शाऊल नबियों से मिलेगा (10:6)। इन आश्वासनों के बावजूद शाऊल यह स्वीकार नहीं कर पाया कि वह इस्राएल का चुना हुआ राजा था (10:16)।

मिस्पा की एक सभा में सार्वजनिक तौर पर नये राजा का चयन हुआ जिसमें शाऊल का नाम घोषित किया गया था (10:17-27)। निर्विरोध चुने जाने के बावजूद शाऊल ने स्वयं दावेदारी नहीं की। उसके संकोच तथा नम्रता का वर्णन बड़े सुन्दर ढंग से किया गया है (10:22)। राजा चुने जाने के बाद वह अपनी दीनता के कारण ही आलोचना को सराहनीय ढंग से सह पाया था (10:27ख)। उसने न तो बदला लेने की इच्छा की और न ही दण्डात्मक कार्रवाई की। उसने अपने आप को बड़ी अच्छी तरह से संयम में रखा। अगली आयत बताती है कि "वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा।" उसने बातों को ऐसे लिया जैसे किसी ने उसे कुछ कहा ही न हो।

राजा चुने जाने के बाद भी शाऊल विनम्र रहा था क्योंकि वह खेती बाड़ी करने के लिए अपने घर चला गया! (10:26; 11:5)। एक जवान के रूप में उसका मन बहुत अच्छा था।

उसने घमण्ड पर काबू पा रखा था, उसने अपने मन में बदला लेने की भावना नहीं रखी थी, वह शांत था और उसमें शान दिखाने की भूख नहीं थी। उसकी इन खूबियों के कारण आपको उसकी तारीफ करनी ही पड़ेगी!

नव-नियुक्त राजा की शीघ्र ही याबेश-गिलाद की घटनाओं से परीक्षा होनी थी (11:1-15)। सौ साल पहले यिप्ताह ने अम्मोनियों को हराया था। अब अम्मोनियों ने याबेश को घेर लिया था। वहां के लोगों को अंतिम चेतावनी दी गई थी (11:2)। जिसमें उन्हें युद्ध में नाकारा कर देने की धमकी दी। निराश होकर न्यायियों 20, 21 के युद्ध में हुए खून के रिश्तों के कारण वे गिबा में गए। यह सुनकर शाऊल ने अपनी सेना लेकर अम्मोनियों पर चढ़ाई कर उन्हें पराजित कर दिया (11:6-11)। शाऊल का राजा बनना एक शानदार शुरुआत थी और पूरे इस्राएल में इसका बहुत आनन्द मनाया गया था (11:15)।

शाऊल का इतिहासः शोचनीय पतन

परमेश्वर के लोगों के राजा के रूप में शाऊल के आरम्भिक दिन परमेश्वर के प्रति उसके समर्पण के कारण बुलंदी पर थे (11:13)। कुछ साल बाद उसका मन बदलने लगा, और उसमें आए बदलाव के कारण इस्राएल में भी बदलाव आ गया। शाऊल के पतन की योजना 1 शमूएल में स्पष्ट तैयार हुई है।

उसके विनाश का पहला संकेत पलिश्तियों के इस्राएल पर आक्रमण से मिला (13:6)। कौम पर भय छा गया था और राजा ने शत्रु का सामना करने के लिए एक सेना का गठन कर लिया था। शाऊल बलिदान भेंट करने के लिए शमूएल के आने की प्रतीक्षा कर रहा था, परन्तु शमूएल नहीं आया। कई दिन बीत जाने के बाद लोगों के वहां से चले जाने के कारण सेना की स्थिति डांवांडोल होने लगी (13:7, 8)। शाऊल ने उत्तेजित होकर स्वयं ही बलिदान भेंट कर दिया (13:9)। शमूएल ने राजा को खूब डांटा, परन्तु उसने नबी की बातों पर ध्यान नहीं दिया (13:10, 11, 13, 14)। यहीं से शाऊल का पतन शुरू होता है।

शाऊल की बर्बादी का अगला संकेत 15:9 में मिलता है

> परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़ बकरियों, गाय बैलों, मोटे पशुओं, और मेमनों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसको उन्होंने सत्यानाश किया।

यहां उसे परमेश्वर द्वारा पूरी तरह से ठुकरा दिया गया। पलिश्ती आक्रमण की घटना को हुए कई वर्ष बीत चुके थे, और इन वर्षों के दौरान शाऊल ने शानदार ढंग से सफलता पाई थी। उसकी सेना बहुत बढ़ गई थी जिससे उसने कई बार विजय प्राप्त की थी, वह देश में भी काफी समृद्ध हो गया और उसकी हर इच्छा नियम के रूप में मानी जाने लगी (14:47, 48)। परन्तु 15:9 में शाऊल बुरी तरह से असफल हुआ था। अमालेक का विनाश न करने के बाद उसे बाइबल में सबसे ज्यादा डांट पाने वालों में देखा जा सकता है। शाऊल द्वारा

परमेश्वर के किए सब कामों के बावजूद उसके जीवन में लालच भर गया जिससे उसका विनाश हुआ। उसका व्यवहार परमेश्वर के प्रति विद्रोही था (15:23)।

अपने पाप के बारे में शाऊल के कथनों में सच्चाई नहीं थी, क्योंकि उन पर राजा बने रहने की उसकी इच्छा का पर्दा था (15:25-30)। वह लोगों में अच्छा बना रहना चाहता था और ऐसा करने के लिए शमूएल के साथ मित्रता का दिखावा आवश्यक था। दीन आदमी घमण्डी और लालची बन चुका था!

इसके परिणाम भयंकर थे:

> और यहोवा ने शमूएल से कहा, मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिए तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय में विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है (1 शमूएल 16:1)।

इब्रानी गूढ़ भाषा में, परमेश्वर के कई बार वह करने के लिए कहने की बात की जाती है जिसकी वह स्वीकृति देता है। शाऊल के साथ भी ऐसा ही हुआ (तु. अय्यूब 1:6-12; लूका 22:31)। शाऊल ने विद्रोह का ढंग अपनाकर परमेश्वर को ठुकरा दिया था। अब अगुआई तथा निर्णय लेने के लिए उसे शैतान को सौंप दिया गया था।

शाऊल को भावी त्रासदी का एहसास हो चुका था, इसलिए उसने अपनी अवज्ञा को सुधारने के लिए अच्छे कर्म करके परमेश्वर की सहायता फिर से प्राप्त करने की कोशिश की थी। शाऊल ने परमेश्वर के दण्ड को बेअसर बनाने के लिए दो बातें करने का प्रयास किया। उसने गिबोनियों को मारने की कोशिश की (तु. 2 शमूएल 21:2) और भूत सिद्धि करने वालों के विरुद्ध कानून लागू किया (1 शमू. 28:9)। परन्तु शाऊल का भविष्य तो तय हो चुका था। उसके मन की गंदगी के कारण उसका आस पास भी भ्रष्ट हो चुका था। उसने दूसरे राजाओं की तरह ही एक मुकुट पहन लिया (2 शमू. 1:10); अपने दरबार की शान-ओ-शौकत बढ़ा दी (2 शमूएल 1:24); अपने पुत्रों के नाम में यहोवा की उपासना के साथ बाल की पूजा को मिला लिया; और रखैलें रख ली थीं।

शाऊल को पतन के कारण बार-बार निराशा के दौरे पड़ने लगे। वीणा बजाकर राजा को चैन देने के लिए एक चरवाहे लड़के को नियुक्त किया गया (16:19)। परन्तु जवान दाऊद की उपस्थिति ने भी शाऊल के मन में ज़हर घोल दिया। दाऊद द्वारा गोलियत को मारने के बाद शाऊल के मन में घृणा और द्वेष के विचार घर कर गए। पागल होकर शाऊल ने दाऊद को मारने की कोशिशें कीं। पहली बार, उसने इस उम्मीद से कि पलिश्ती ही उसका काम तमाम कर देंगे, धोखे का सहारा लिया (18:21)। अंत में उसने दाऊद के विरुद्ध सरकारी कार्य किया (19:1)। दाऊद के विरुद्ध शाऊल की घृणा किसी भी प्रकार कम न हुई। दो बार राजा की जान बख़्श दी गई, परन्तु दाऊद की कोमलता का शाऊल के कठोर मन पर कोई असर नहीं हुआ। घृणा का शिकार हुआ शाऊल मानसिक रूप से विकृत

हो चुका था। शाऊल अब नम्र नहीं रहा था। धीरे-धीरे आरम्भिक दिनों के आनन्द की जगह बाद के अंधकार भरे दिनों ने ले ली थी।

उसका पतन एन्दोर की घटना तक पूरा हो ही चुका था (28:3-25)। गोलियत को मरे कई साल गुज़र गए थे। शाऊल से बचने के लिए जंगलों की खाक छानते-छानते दाऊद को कई साल बीत चुके थे। शाऊल के पुराने शत्रु पलिश्ती इस्राएल पर हमला बोलने वाले थे। पलिश्तियों का उद्देश्य एसड्राएलोन के मैदानों[1] में से प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर कब्ज़ा करना था। शाऊल ने गिलबो पर्वत पर अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया, परन्तु वह हिम्मत हार चुका था (28:5; तु. अय्यूब 23:8)। उसे सहायता की आवश्यकता थी, लेकिन परमेश्वर कुछ बता नहीं रहा था। राजा सलाह लेने के लिए एक जादूगरनी के पास गया (28:6, 7), परन्तु जादूगरनी के जादू की पोल उस समय खुल गई, जब शमूएल को आते देखकर वह स्वयं चौंक गई (28:12)। बुज़ुर्ग नबी शमूएल ने शाऊल को किसी प्रकार की उम्मीद या सांत्वना नहीं दी, क्योंकि उसके अंत को बदला नहीं जा सकता था (28:16)। शमूएल का संदेश सुनकर शाऊल मूर्छित हो गया (28:20)। जादूगरनी के घर ज़मीन पर पड़े हुए शाऊल के मन में आने वाले विचारों की कल्पना करने की कोशिश करें। उसने यहोवा का विद्रोह करने के कारण होने वाले पतन को एक-एक करके याद किया होगा।

शाऊल का पतन गिलबो पर्वत पर बिल्कुल स्पष्ट हो गया (31:1-6)। दोनों सेनाएं एक दूसरे के सामने खड़ी थीं और युद्ध शुरू हो चुका था। शाऊल की सेना हार गई और पहाड़ लहूलुहान हो चुका था। घायल शाऊल ने शत्रु के हाथ आने से बचने के लिए आत्महत्या करने का प्रयास किया, परन्तु वह असफल रहा। वह एक अमालेकी के हाथों मारा गया था (2 शमूएल 1:1-10)। याबेश-गिलाद के कृतज्ञ लोगों ने शाऊल और उसके पुत्रों की लाशों को जलाया और उन्हें अपने खण्डहरों में दफ़ना दिया (31:13)।

शाऊल का इतिहास: प्रभाव कम होना

शाऊल के जीवन के विवरण में उसकी त्रासदी का एकमात्र कारण स्वार्थ ही लगता है। उसने अपना ध्यान परमेश्वर से हटाकर अपने आप पर लगा लिया था। स्वार्थ शाऊल के पतन तथा अंत में मृत्यु का कारण बना। (11:13 की 15:12; 18:8; 15:7 के साथ तुलना करें)।

स्वार्थ के हावी होने पर शाऊल घमण्ड, बदला लेने और भौतिकवाद पर अपना नियन्त्रण खो चुका था। शासन करने के लिए स्वयं को छूट देकर वह सनकी और चिड़चिड़ा बन गया। वह हत्यारे का हृदय दिखाकर एक अथाह मौत मरा (यशायाह 56:11; यिर्मयाह 17:11)।

स्वार्थ के कारण शाऊल गिलगाल में बलिदान करने के लिए विवश हुआ था (13:9)। उसने परमेश्वर की सेवा करने से इन्कार किया और निरंकुश शासक बनना चाहा। उसने विश्वास से परमेश्वर की प्रतीक्षा नहीं की। शाऊल के विचार से परमेश्वर बहुत धीमे चल रहा था और वह प्रतीक्षा करते-करते थक गया था (नीतिवचन 30:8, 9)।

स्वार्थ ने शाऊल को अपनी असफलताओं का बहाना बनाने के लिए प्रेरित किया। पहला शमूएल 13:11, 12 कहता है:

> शमूएल ने पूछा, तू ने क्या किया? शाऊल ने कहा, जब मैं ने देखा कि लोग मेरे पास से इधर-उधर हो चले हैं, और तू ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठे हुए हैं, तब मैं ने सोचा कि पलिश्ती गिलगाद में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे, और मैंने यहोवा से बिनती भी की है; सो मैंने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया।

उसके कहने का अर्थ था, ''मैं करना तो नहीं चाहता था, परन्तु करे बिना गुज़ारा नहीं था; हालात ने मुझे मजबूर कर दिया था!'' (तु. 15:19-21; मीका 2:2)।

स्वार्थ के कारण शाऊल ने अमालेकियों को छोड़ दिया था (15:9)। लालच ने एक रेखा खींच दी जिसने अच्छी-अच्छी चीज़ें उसके लिए रखीं (15:19)। शाऊल का अन्त एक अमालेकी की तलवार से गिलबो पर्वत पर हो गया! स्वार्थ हमेशा नुक़्सान ही पहुंचाता है (मत्ती 16:26; हाग्गै 1:6)।

आरम्भ में शाऊल ने स्वार्थ पर नियंत्रण रखा था। पर धीरे-धीरे वह नियन्त्रण बिल्कुल खत्म हो गया। फिर उसे त्रासदी सहनी पड़ी! (15:19ख; नीतिवचन 16:18)।

शाऊल का इतिहास: महत्वपूर्ण सबक

यहोवा की ''बाट जोहना'' कितना आवश्यक है। कभी भी मामले को अपने हाथ में न लें।

भटकने वाले माता-पिता का शोचनीय तथा दूर तक असर करने वाला प्रभाव कितना अधिक है (31:2; 2 शमूएल 21:1-10)। शाऊल के कामों के कारण उसके पूरे परिवार को कष्ट सहना पड़ा!

परमेश्वर से दूर जाने की वास्तविकता कितनी भयदायक है (17:11; 18:12; 28:16)। हम सब पर प्रलोभन आते हैं, जो बहुत ही लुभावने लगते हैं, परन्तु हमें उन में नहीं फंसना चाहिए। हमारे अंदर के मन को हर रोज़ क्रूस पर चढ़ाया जाना आवश्यक है।

भटक जाने वाले विश्वासी का मन कितना कठोर हो सकता है (24:17)। मन फिराव बाहरी या दिखावटी हो सकता है, परन्तु यह केवल दुष्ट मन को पाप की गहराई में ही ले जाएगा!

स्वार्थी होना कितना लुभावना लगता है, परन्तु स्वार्थ है कितना खतरनाक (1 कुरिन्थियों 10:24; 2 कुरिन्थियों 5:15ख; नीतिवचन 1:19; 15:27)।

हमें चाहिए कि सभी ''अमालेकियों'' को अपने अंदर से निकाल दें! यदि हम ऐसा नहीं कर पाते तो वे अवसर पाकर हमारा नाश कर देंगे! कुलुस्सियों 3:5-9 हमें चेतावनी देता है:

...पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष, वैरभाव, निंदा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो ज्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है।

सारांश

यरदन नदी में आने वाली बाढ़ से बड़े-बड़े पेड़ों की जड़ें उखड़कर खारे पानी में मृत सागर के तट तक चली गई हैं। ये पेड़ हमें परमेश्वर द्वारा लगाए गए जीवनों के फल देने और छाया देने का स्मरण कराते हैं जो अपने मूल उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाए। वे मृत तथा बेकार पड़े हैं। मनुष्य के मन की खोज करने पर इससे भी बड़ी त्रासदी मिलती है, शाऊल उन में प्रमुख है!

शाऊल के शासन की शुरुआत बहुत अच्छे ढंग से हुई थी, परन्तु स्वार्थ ने उसे हठी, अवज्ञाकारी, और घमण्डी बना दिया था। आज उसकी विरासत केवल एक शाही राजघराने के संस्थापक के रूप में है जो न्याय के लिए प्रसिद्ध था। उसके राज को विघटन तथा भ्रष्टता के रूप में जाना जाता है। सब ईमानदार मनों को उससे सीख लेनी चाहिए। गिलबो का मैदान उन लोगों की जो यह सोचते हैं कि शाऊल की तरह गलती करके भी वे सफल हो सकते हैं, उनकी प्रतीक्षा कर रहा है! (1 कुरिन्थियों 10:12)।

टिप्पणी

[1]कर्मेल पहाड़ के निकट भूमध्य से लेकर यरदन नदी तक फैला इस्राएल का मैदानी भाग: प्राचीन युद्धों का दृश्य इसे *यिज्रेल का मैदान* भी कहा जाता है।